Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 1

– Save This Page as a PDF–

pdf डाउनलोड कारे

यह बारह प्रेरितों के नाम हैं

मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-१९; लूका ६:१२-१६

यह उनके सार्वजनिक मंत्रालय के इस बिंदु पर था कि यीशु ने कई शिष्यों में से बारह के प्रेरित समूह को चुना था जो उनका अनुसरण कर रहे थे। इस टिप्पणी में मैं प्रेरितों और शिष्यों के बीच अंतर बताऊंगा। बारहों को प्रेरित या तल्मिडिम (हिब्रू) कहा जाएगा, और जो अन्य उस पर विश्वास करेंगे उन्हें शिष्य कहा जाएगा। हालाँकि यह सच है कि सभी प्रेरित भी शिष्य थे, लेकिन यह सच नहीं है कि सभी शिष्य प्रेरित थे।



उन दिनों में से एक दिन यीशु प्रार्थना करने के लिए
पहाड़ पर गया, और परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए रात बिताई। जब सुबह हुई तो उसने अपने प्रेरितों या तालमिदिम (बहुवचन) को अपने पास बुलाया और उनमें से बारह को चुना कि वे हर समय उसके साथ रहें। एक टैल्मिड (एकवचन) केवल एक शिक्षार्थी है, जो एक विशिष्ट रब्बी का अनुसरण करने और उससे सीखने के लिए प्रतिबद्ध है। उसने उन्हें प्रेरित नियुक्त किया, या ऐसे लोगों को भेजा जिनके पास प्रेषक का अधिकार था, और उन्हें उपदेश देने और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखने के लिए भेजा। यीशु ने अपनी अलौकिक शक्ति बारहों के हाथों में नहीं सौंपी कि वे उसका प्रयोग करें। उसने उन्हें राक्षसों को बाहर निकालने का अधिकार इस अर्थ में सौंपा कि टैल्मिडिम बाहर निकालने की घोषणा करने वाला शब्द बोलेगा, और फिर ईश्वर की शक्ति उन्हें बाहर निकाल देगी। इस प्रकार, उन्होंने बारह विशेष शिष्यों को अपना प्रेरित चुना; उसने बारह यहूदी पुरुषों को अपने अधिकार के साथ बाहर भेजने

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 2

के लिए चुना (मरकुस ३:१३-१५; लूका ६:१२-१३)।

जैसा कि जॉन मैकआर्थर ने अपनी पुस्तक ट्वेल्व ऑर्डिनरी मेन में विस्तार से बताया है, सभी बारह प्रेरितों के जीवन में जो एक तथ्य सामने आता है वह यह है कि जब यीशु उनसे मिले थे तो वे कितने साधारण और अपरिष्कृत थे। यहूदा इस्कैरियट को छोड़कर सभी बारह, गलील से थे। वह पूरा क्षेत्र मुख्यतः ग्रामीण था, जिसमें छोटे- छोटे कस्बे और गाँव शामिल थे। इसके लोग कुलीन नहीं थे. वे अपनी शिक्षा के लिए नहीं जाने जाते थे। वे आम से आम थे। वे मछुआरे और किसान थे। टैल्मिडिम भी ऐसे ही थे। मसीहा ने जानबूझकर उन लोगों को पीछे छोड़ दिया जो कुलीन और प्रभावशाली थे और उन्होंने ज्यादातर समाज के निचले तबके से लोगों को चुना।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रेरितों ने कभी भी मैरी से प्रार्थना नहीं की, न ही, जहाँ तक बाइबिल का रिकॉर्ड है, उन्होंने उसे कोई विशेष सम्मान दिखाया। पतरस, पॉल, युहन्ना और याकूब ने परमेश्वर की मंडलियों को लिखे पत्रों में एक बार भी उसके नाम का उल्लेख नहीं किया है। युहन्ना ने उसके मरने तक उसकी देखभाल की (युहन्ना १९:२५-२७), लेकिन अपने तीन पत्रों में से किसी में या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उसका उल्लेख नहीं किया।

प्रत्येक टैल्मिडिम के लिए हम तीन क्षेत्रों को देखेंगे। सबसे पहले, एक परिचय होगा; दूसरा, हम प्रेरितों की मृत्यु को देखेंगे; और तीसरा हम प्रत्येक प्रेरित की विरासत को देखेंगे। ये बारह हैं जिन्हें उसने नियुक्त किया (मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१६-१९; लूका ६:१२-१६):

१. शमौन का परिचय – शमौन (जिसे उन्होंने केफ़ा नाम दिया था), पहले सूचीबद्ध किया गया है, और वह प्रेरितों का नेता था। यीशु ने उसे एक अतिरिक्त नाम दिया जो उसके पास पहले से था (यूहन्ना १:४२)। वह व्यापार से मछुआरा था, उसे हिब्रू में शिमोन, ग्रीक में पीटर और अरामी में सेफस कहा जाता था, जिसका अर्थ चट्टान होता है। जन्म के समय उनका पूरा नाम शमौन बार-जोना (मत्ती १६:१७) था, जिसका अर्थ है शमौन, जोना का पुत्र (युहन्ना २१:१५-१७)। हम उसके माता-पिता के बारे में कुछ नहीं जानते। शमौन एक बहुत ही सामान्य नाम था जिसमें अकेले गॉस्पेल में सात शमौन सूचीबद्ध थे। यह नाम एक चट्टान जैसे व्यक्ति का वर्णन करता है, जो भरोसेमंद, अचल, आपात्कालीन स्थितियों और संकटों का सामना करने वाला व्यक्ति था। प्रारंभिक मसीहाई आंदोलन में एक चट्टान बनकर वह निश्चित रूप से अपने नाम को कायम रखेगा। शमौन पतरस की एक पत्नी थी। हम इसे जानते हैं क्योंकि लूका ४:३८ में यीशु ने अपनी सास को ठीक किया, और पॉल ने प्रथम कुरिन्थियों ९:५ में कहा कि पतरस उसे अपने प्रेरितिक मिशन पर ले गया।

मृत्यु: हम जानते हैं कि यीशु ने शमौन से कहा था कि वह शहीद होकर मरेगा (यूहन्ना २१:१८-१९)। लेकिन धर्मग्रंथ उनकी मृत्यु को दर्ज नहीं करता है। आरंभिक चर्च के

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 3

सभी अभिलेख संकेत करते हैं कि पतरस को रोम में क्रूस पर चढ़ाया गया था। यूसेबियस क्लेमेंट की गवाही का हवाला देता है, जो कहता है कि पतरस को सूली पर चढ़ाने से पहले उसे अपनी पत्नी को सूली पर चढ़ते हुए देखने के लिए मजबूर किया गया था। क्लेमेंट कहता है, जब उसने उसे उसकी मृत्यु की ओर ले जाते हुए देखा, तो पतरस ने उसे नाम से पुकारा और कहा, “प्रभु को याद करो।” जब पतरस के मरने की बारी आई, तो उसने उल्टा सूली पर चढ़ाए जाने की याचना की क्योंकि वह मरने के योग्य नहीं था क्योंकि उसका प्रभु मर गया था। और इस प्रकार उसका सिर नीचे की ओर करके उसे सूली पर चढ़ा दिया गया।

विरासत: पतरस के जीवन को उसके दूसरे पत्र के अंतिम शब्दों में संक्षेपित किया जा सकता है: हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की कृपा और ज्ञान में बढ़ें (दूसरा पतरस ३:१८)। शमौन पतरस ने बिल्कुल यही किया, यही कारण है कि वह चट्टान बन गया, ईश्वर की प्रारंभिक सभाओं का महान नेता।

२. पतरस के भाई अन्द्रियास का परिचय। हालाँकि वे भाई थे, लेकिन उनकी नेतृत्व शैली बिल्कुल अलग थी। लेकिन जिस तरह पतरस अपनी बुलाहट के लिए बिल्कुल उपयुक्त था, उसी तरह अन्द्रियास भी उसके लिए बिल्कुल उपयुक्त था। अन्द्रियास, ग्रीक मूल का एक नाम है, हालांकि यहूदियों के बीच उपयोग में है, यह मनुष्य के लिए एक ग्रीक शब्द से आया है। बारह में से सबसे पहले बुलाया गया था, लेकिन आंतरिक घेरे में चार में से अन्द्रियास सबसे कम विशिष्ट था। धर्मग्रंथ हमें उसके बारे में बहुत कुछ नहीं बताते, लेकिन हम जानते हैं कि उसने दरवाजे पर अपने अहंकार की जाँच की थी। वह उन सभी की तस्वीर है जो पर्दे के पीछे चुपचाप अपने आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग करते हैं, न कि केवल तब जब लोग देख रहे हों, जैसे कि आप केवल उन्हें खुश करना चाहते हैं। परन्तु मसीह के दास-दास के रूप में, जो परमेश्वर उनसे जो चाहता है उसे करने की गहरी इच्छा रखते हैं (इफिसियों ६:६)। वह उन दुर्लभ लोगों में से एक थे जो दूसरा स्थान लेने के इच्छुक थे और जब तक काम चल रहा था तब तक छुपे रहने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी।

मृत्यु: चर्च का इतिहास यह दर्ज नहीं करता है कि प्रेरितों २ में सप्ताहों के पर्व के बाद अन्द्रियास के साथ क्या हुआ। परंपरा कहती है कि वह सुसमाचार को उत्तर की ओर ले गया। प्राचीन चर्च के इतिहासकार यूसेबियस का कहना है कि अन्द्रियास सिथिया तक गए थे (यही कारण है कि अन्द्रियास रूस के संरक्षक संत हैं)। अंततः उन्हें अचिया में क्रूस पर चढ़ाया गया, जो एथेंस के पास दक्षिणी ग्रीस में है। एक लेख में कहा गया है कि वह एक प्रांतीय रोमन गवर्नर की पत्नी को ईसा मसीह के पास ले गया और इससे उसका पति क्रोधित हो गया। उसने मांग की कि उसकी पत्नी यीशु मसीह के प्रति अपनी भक्ति त्याग दे और उसने इनकार कर दिया। इसलिए गवर्नर ने अन्द्रियास को क्रूस पर चढ़ा दिया। उसकी पीड़ा को लम्बा करने के लिए, उसे कीलों से ठोकने के बजाय उसे सूली पर लटका दिया गया (परंपरा कहती है कि यह एक साल्टायर, या एक एक्स आकार का क्रॉस था)। अधिकांश खातों के अनुसार वह दो दिनों तक क्रूस पर

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 4

लटके रहे और अपने उत्पीड़कों को तब तक उपदेश देते रहे जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो गई।

विरासत: अन्द्रियास हमें दिखाता है कि प्रभावी मंत्रालय में अक्सर छोटी चीजें होती हैं जो मायने रखती हैं – व्यक्तिगत लोग, पर्दे के पीछे के उपहार और अगोचर सेवा। परमेश्वर ऐसी वस्तुओं का उपयोग करने से प्रसन्न होता है, क्योंकि परमेश्वर ने बुद्धिमानों को लज्जित करने के लिये जगत के मूर्खों को चुन लिया है; परमेश्वर ने बलवानों को लज्जित करने के लिये संसार की निर्बल वस्तुओं को चुना। परमेश्वर ने इस जगत के दीन लोगों और तुच्छ वस्तुओं को – और जो हैं ही नहीं, उन को भी चुन लिया, कि जो हैं उन्हें व्यर्थ कर दें, ताकि कोई उसके साम्हने घमण्ड न कर सके (१ कुरिन्थियों १:२७-२९)।

३. जेम्स (याकूव का एक बड़ा अंग्रेजी संस्करण) का परिचय, वह ज़ेबेदी के बेटे और उसके छोटे भाई युहन्ना, उन्हें यीशु ने बोएनर्जेस नाम दिया, जो उनके पास पहले से था। उनका नया नाम बोएनर्जेस, जिसका अर्थ है “गर्जन के पुत्र”, स्पष्ट रूप से उनके उत्साह और आवेगी स्वभाव (लूका ९:५४) द्वारा उचित ठहराया गया था। कभी-कभी जेम्स द ग्रेट के रूप में जाना जाता है, वह मसीहा के निकटतम आंतरिक सर्कल से हमारे लिए सबसे कम परिचित है। बाइबिल का विवरण व्यावहारिक रूप से उनके जीवन के बारे में किसी भी स्पष्ट विवरण से रहित है। लेकिन अगर कोई ऐसा कीवर्ड है जो याकूब का वर्णन करता है तो वह है जुनून। हम उनके बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उससे यह स्पष्ट है कि वह तीव्र उत्साह के व्यक्ति थे।

मृत्यु: याकूब एकमात्र प्रेरित हैं जिनकी मृत्यु पवित्रशास्त्र में दर्ज है। यह लगभग इसी समय था जब राजा हेरोदेस ने मसीहाई समुदाय के कुछ सदस्यों को गिरफ्तार करना और उन पर अत्याचार करना शुरू कर दिया था, और उसने योचानन के भाई याकोव को तलवार से मार डाला था (प्रेरितों के काम १२:१-२ सीजेबी)। दूसरे शब्दों में, येरूशलेम में उनका सिर कलम कर दिया गया। इतिहास दर्ज करता है कि याकूब की गवाही उसकी फाँसी के क्षण तक फल देती रही। आरंभिक चर्च इतिहासकार यूसेबियस, याकूब की मृत्यु का विवरण देता है जो अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट से आया था। क्लेमेंट का कहना है कि जो याकोव को न्याय आसन तक ले गया, जब उसने उसे गवाही देते हुए सुना, तो वह द्रवित हो गया और उसने स्वीकार किया कि वह स्वयं एक आस्तिक था। इसलिए, उन दोनों को एक साथ ले जाया गया; और रास्ते में उसने याकूब से उसे माफ करने की विनती की। और याकोव ने थोड़ा विचार करने के बाद कहा, “तुम्हें शांति मिले,” और उसे चूमा। और इस तरह उन दोनों का एक साथ सिर काट दिया गया।

विरासत: याकूब भावुक, उत्साही, अग्रणी व्यक्ति का प्रोटोटाइप है जो गतिशील, मजबूत और महत्वाकांक्षी है। आख़िरकार उनकी भावनाओं को संवेदनशीलता और अनुग्रह ने शांत कर दिया। कहीं न कहीं उसने अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना, अपनी जीभ पर लगाम लगाना, अपने जोश को पुनर्निर्देशित करना और बदला लेने की अपनी प्यास को

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 5

खत्म करना सीख लिया था। परिणामस्वरूप, प्रभु ने उसे मसीहाई समुदाय में अद्भुत कार्य करने के लिए उपयोग किया। याकूब जैसे जुनून वाले व्यक्ति के लिए ऐसे सबक सीखना कभी-कभी कठिन होता है। इस तरह का जोश हमेशा प्यार से संयमित होना चाहिए। लेकिन अगर इसे रुआच हाकोडेश के नियंत्रण में समर्पित कर दिया जाए और धैर्य और सहनशीलता के साथ मिश्रित किया जाए, तो ऐसा उत्साह ईश्वर के हाथों में एक अद्भुत उपकरण हो सकता है। याकूब की विरासत इसका स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करती है।

४. याकूब के छोटे भाई युहन्ना का परिचय, जिनकी माँ सैलोम और पिता ज़ेबेदी थे। येशुआ ने उन्हें बोएनर्जेस नाम दिया, जिसका अर्थ है “गर्जन के पुत्र”, जो स्पष्ट रूप से उनके उत्साह और आवेगपूर्ण स्वभाव से उचित था (लूका ९:५४)। युहन्ना ने प्रारंभिक चर्च में एक प्रमुख भूमिका निभाई। वह मसीह के सबसे घनिष्ठ आंतरिक घेरे का सदस्य था, लेकिन वह किसी भी तरह से उस समूह का प्रमुख सदस्य नहीं था। वह चौथे सुसमाचार, तीन अन्य पत्रों, साथ ही रहस्योद्घाटन की पुस्तक के मानव लेखक थे। योचनान को प्रेम के दूत के रूप में जाना जाता है। लेकिन यह एक गुण था जो उसने मसीहा से सीखा था, न कि कुछ ऐसा जो स्वाभाविक रूप से उसमें आया था। अपनी युवावस्था में, वह अपने बड़े भाई याकूब की तरह ही दृढ़, उत्साही और विस्फोटक थे। यूहन्ना प्रेरितों में से एकमात्र है जिसने सूली पर चढ़ते देखा (योचनान १९:२५-२७)। प्रारंभिक चर्च इतिहास के लगभग सभी विश्वसनीय स्रोत इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि योचानान उस चर्च का पादरी बन गया जिसे प्रेरित पॉल ने इफिसस में स्थापित किया था।

मृत्यु: यूहन्ना एकमात्र ऐसा प्रेरित था जो वृद्धावस्था तक जीवित रहा। जब युहन्ना का भाई याकूब चर्च का पहला शहीद बना, तो युहन्ना ने दूसरों की तुलना में अधिक व्यक्तिगत तरीके से इस नुकसान को सहन किया। जैसे ही अन्य सभी प्रेरित एक-एक करके शहीद हुए, उन्हें अतिरिक्त नुकसान का दुःख और दर्द सहना पड़ा। वे उसके मित्र और साथी थे। जल्द ही वह अकेला रह गया। कुछ मायनों में, वह शायद सबसे दर्दनाक पीड़ा रही होगी। इफिसस से, रोमन सम्राट डोमिनिशियन के तहत महान उत्पीड़न के दौरान, युहन्ना को आधुनिक तुर्की के पश्चिमी तट से दूर एजियन सागर में छोटे डोडेकेनीज़ द्वीपों में से एक, पेटमोस के एक जेल समुदाय में भेज दिया गया था। वह वहाँ एक गुफा में रहता था और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वर्णित सर्वनाशकारी दर्शनों को प्राप्त करता था और उन्हें दर्ज करता था। अंततः रिहा हुए, युहन्ना की ९८ ईस्वी के आसपास मृत्यु हो गई। चर्च के फादर जेरोम गलाटियंस पर अपनी टिप्पणी में कहते हैं कि वृद्ध प्रेरित इफिसस में अपने अंतिम दिनों में इतने कमजोर थे कि उन्हें चर्च में ले जाना पड़ा। एक वाक्यांश लगातार उसके होठों पर रहता था: मेरे छोटे बच्चों, एक दूसरे से प्यार करो (पहला यूहन्ना ३:१८)। यह पूछे जाने पर कि वह हमेशा ऐसा क्यों कहते हैं, उन्होंने उत्तर दिया, “यह ईश्वर की आज्ञा है, और यदि केवल इतना ही किया जाए, तो यह पर्याप्त है।”

विरासत: वास्तव में, युहन्ना के धर्मशास्त्र को प्रेम के धर्मशास्त्र के रूप में

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 6

सबसे अच्छा वर्णित किया गया है। उन्होंने सिखाया कि ईश्वर प्रेम का ईश्वर है, कि ईश्वर अपने एकमात्र पुत्र से प्रेम करता है, कि ईश्वर संसार से प्रेम करता है, कि मसीह ईश्वर से प्रेम करता है, कि मसीह अपने प्रेरितों से प्रेम करता है, और कि मसीह के अनुयायी उससे प्रेम करते हैं, कि हर किसी को मसीह से प्रेम करना चाहिए , कि हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए, और वह प्रेम टोरा को पूरा करता है। प्रेम युहन्ना की शिक्षा के प्रत्येक तत्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, इस प्रकार, यह उनकी विरासत है।

इस प्रकार, गलील के मछुआरे – पतरस, अन्द्रियास, याकूब और युहन्ना – बड़े पैमाने पर पुरुषों और महिलाओं, लड़के और लड़कियों के मछुआरे बन गए, और आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में इकट्ठा किया। एक अर्थ में, वे अभी भी धर्मग्रंथों में अपनी गवाही के द्वारा संसार के समुद्र में अपना जाल डाल रहे हैं। वे अभी भी बड़ी संख्या में लोगों को मसीहा के पास ला रहे हैं। यद्यपि वे आम आदमी थे, फिर भी उनकी असाधारण पहचान थी।

५. फिलेप्पुस का परिचय, जो एक ग्रीक नाम है, जिसका अर्थ है घोड़ों का प्रेमी। शायद फिलेप्पुस हेलेनिस्टिक यहूदियों के परिवार से आया था (प्रेरितों ६:१)। हालाँकि, उसका कोई यहूदी नाम भी रहा होगा, क्योंकि सभी बारह टैल्मिडिम यहूदी थे। लेकिन अगर उसका कोई यहूदी नाम था तो यह कभी नहीं दिया गया, इसलिए हम उसे केवल फिलेप्पुस के नाम से जानते हैं। अन्द्रियास और पतरस की तरह, फिलेप्पुस भी बेथसैदा शहर से था (यूहन्ना १:४४)। जिस सहजता से फिलेप्पुस ने जवाब दिया जब येशुआ ने उससे कहा: मेरे पीछे आओ (युहन्ना १:४३), यह दर्शाता है कि वह तानाख को जानता था। वह तैयार था. वह आशावान था. उसका हृदय तैयार हो गया, और उसने मेशियाक को ख़ुशी से स्वीकार कर लिया। लेकिन कभी-कभी उनकी तार्किक सोच अन्य मामलों में उनके विश्वास के आड़े आ जाती थी। ५,००० लोगों को खाना खिलाते समय जब यीशु ने फिलिप्पुस से कहा: हम इन लोगों के खाने के लिए रोटी कहाँ से खरीदें? फिलिप्पुस ने उसे उत्तर दिया, “उन सभी के खाने के लिए पर्याप्त रोटी खरीदने में आधे वर्ष से अधिक की मजदूरी लगेगी (मरकुस ६:३७बी; यूहन्ना ६:५-७)! ईसा मसीह की असीम अलौकिक शक्ति उनकी सोच से पूरी तरह ओझल हो गई थी। फिलेप्पुस को अपनी भौतिकवादी, व्यावहारिक, सामान्य ज्ञान संबंधी चिंताओं को अलग रखना और विश्वास की अलौकिक क्षमता को पकड़ना सीखना था। दूसरे शब्दों में, उसे आध्यात्मिक दायरे से बाहर सोचने की जरूरत थी।

मृत्यु: परंपरा हमें बताती है कि प्रारंभिक मसीहाई आंदोलन के प्रसार में फिलेप्पुस का बहुत उपयोग किया गया था और वह शहीद होने वाले पहले प्रेरितों में से एक थे। याकूब की शहादत के आठ साल बाद, फ़्रीगिया (एशिया माइनर) में हिएरापोलिस के गवर्नर द्वारा उसके टखनों में लोहे के हुक से उल्टा लटकाए जाने के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 7

विरासत: फिलेप्पुस ने स्पष्ट रूप से उन मानवीय प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त की जो अक्सर उसके विश्वास में बाधा बनती थीं। इसलिए, वह सभी युगों के अन्य प्रेरितों और विश्वासियों के साथ इस बात के प्रमाण के रूप में खड़ा है कि हमें परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए पूर्ण होने की आवश्यकता नहीं है। कभी- कभी हमारा प्रभामंडल फिसल जाता है, जैसा कि फिलेप्पुस का हुआ था। लेकिन वह बदल गया और हम भी बदल सकते हैं! उनकी मृत्यु से पहले, उनके उपदेश के तहत बड़ी संख्या में लोग यीशु को अपने ईश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में जानने लगे।

६. नतनएल का परिचय, जिसे बारह की सभी चार सूचियों (प्रेरितों के काम १:१३ सहित) में बरतुलमाई के नाम से भी जाना जाता है। युहन्ना के सुसमाचार में उसे सदैव नथनेल कहा गया है। बरतुलमाई एक हिब्रू उपनाम है जिसका अर्थ है टोलमाई का पुत्र, या बार-टोल्माई, अलेक्जेंड्रियन विजय के बाद कई मिस्र के राजाओं को दिए गए टॉलेमी नाम का हिब्रू लिप्यंतरण, जिसने इज़राइल को कई दशकों तक मिस्र के शासन और प्रभाव के तहत लाया। इस प्रकार, यह आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि एक यहूदी का मिस्र नाम होगा। सिनॉप्टिक गॉस्पेल और एक्ट्स की पुस्तक में नथनेल की पृष्ठभूमि, चरित्र या व्यक्तित्व के बारे में कोई विवरण नहीं है। युहन्ना के सुसमाचार में उन्हें केवल दो अंशों में दर्शाया गया है, युहन्ना १ में, जहां उनकी पुकार दर्ज है, और योचनान २१:२ में, जहां उन्हें उन लोगों में से एक के रूप में नामित किया गया है जो गलील लौट आए और यीशु के पुनरुत्थान के बाद और उनके आरोहण से पहले पतरस के साथ मछली पकड़ने गए थे।

हालाँकि उसने नाज़रेथ के लोगों के प्रति कुछ प्रारंभिक पूर्वाग्रह रखे थे (यूहन्ना १:४६); सौभाग्य से, उसका पूर्वाग्रह उसके खोजी हृदय जितना शक्तिशाली नहीं था। नतनएल के चरित्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू येशुआ के होठों से व्यक्त हुआ जब उसने कहा: यहाँ सचमुच एक इस्राएली है जिसमें कोई छल नहीं है (यूहन्ना १:४७)। इसने नथनेल के चरित्र के बारे में बहुत कुछ बताया। वह शुरू से ही साफ दिल के थे. निश्चय ही, वह मानव था। उसमें पापमय दोष थे। उनका मन कुछ हद तक पूर्वाग्रह से ग्रसित था। लेकिन उसके दिल में धोखे का ज़हर नहीं भरा था। वह कोई पाखंडी नहीं था। ईश्वर के प्रति उनका प्रेम और मसीहा को देखने की उनकी इच्छा वास्तविक थी। उसका हृदय कपट रहित सच्चा था।

मृत्यु: पवित्रशास्त्र से हम नथनेल के बारे में बस इतना ही जानते हैं। प्रारंभिक चर्च रिकॉर्ड से पता चलता है कि उन्होंने फारस और भारत में सेवा की और आर्मेनिया तक सुसमाचार पहुंचाया। उसे जीवित ही फाँसी दे दी गयी।

विरासत: हम जो जानते हैं वह यह है कि नथनेल अंत तक वफादार था क्योंकि वह शुरू से ही वफादार था। मसीहा के साथ उसने जो कुछ भी अनुभव किया और प्रेरितों के काम २ में मसीहाई समुदाय के जन्म के बाद उसने जो कुछ भी अनुभव किया, उससे अंततः उसका विश्वास और मजबूत हुआ। और नतनएल, अन्य तल्मिडिम की तरह, इस बात का प्रमाण है कि

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 8

ईश्वर सबसे सामान्य लोगों को, सबसे महत्वहीन स्थानों से ले सकता है, और उन्हें अपनी महिमा के लिए उपयोग कर सकता है।

७. हिब्रू में थॉमस और ग्रीक में डिडिमस का परिचय, जिसका अर्थ है जुड़वाँ। ऐसा लगता है कि उसका कोई जुड़वा भाई या बहन था, लेकिन बाइबल में इस जुड़वा भाई की पहचान कभी नहीं की गई है। नतनएल की तरह, थॉमस का उल्लेख तीन सिनॉप्टिक गॉस्पेल में से प्रत्येक में केवल एक बार किया गया है। प्रत्येक मामले में, उसका नाम अन्य टैल्मिडिम के साथ रखा जाता है। सिनोप्टिक्स में उनके बारे में कोई विवरण नहीं दिया गया है, इसलिए हम युहन्ना की पुस्तक से उनके चरित्र के बारे में जो कुछ भी जानते हैं वह सब कुछ सीखते हैं। थॉमस निराशावादी थे. विनी द पूह में ईयोर की तरह, उन्होंने हर समय सबसे खराब की आशंका जताई। जब मसीह लाजर को ठीक करने के लिए यरूशलेम वापस जा रहे थे, तो थॉमस को आगे आपदा के अलावा कुछ भी नहीं दिख रहा था। उसे यकीन था कि यीशु सीधे फरीसियों के हाथों पथराव के लिए जा रहा था। परन्तु यदि प्रभु ने यही करने का निश्चय किया था, तो थॉमस ने उसके साथ मरने का दृढ़ निश्चय किया और कहा: आओ, हम भी चलें, कि हम उसके साथ मर सकें (योचनान ११:१६)। ऐसा लगता है कि विश्वास की कमी के बजाय निराशावाद ही उसका एकमात्र पाप था। स्पष्ट रूप से थॉमस की ईसा मसीह के प्रति गहरी भक्ति थी जिसे उनके अपने निराशावाद से भी कम नहीं किया जा सका।

जब थॉमस को बताया गया कि क्रूस पर चढ़ने के बाद प्रभु पुनर्जीवित हो गए हैं, तो वह इसके बारे में निराशावादी थे और इसे स्वयं देखना चाहते थे। याद रखें, अन्य प्रेरित तब तक पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे जब तक कि उन्होंने यीशु को नहीं देखा था (मरकुस १६:१०-११)। जब मसीहा प्रकट हुए और संशयवादियों को अपने घाव दिखाए, तो थॉमस ने तालिमिडिम के होठों से अब तक आए सबसे महान बयानों में से एक कहा: मेरे ईश्वर और मेरे ईश्वर (युहन्ना २०:२८)! अचानक, थॉमस की उदासी, बेचैनी, नकारात्मक, मूडी प्रवृत्तियाँ मसीह के प्रकट होने से हमेशा के लिए दूर हो गईं। थोड़े समय बाद सप्ताहों के पर्व पर, वह पवित्र आत्मा से भर गया और मंत्रालय के लिए सशक्त हो गया। वह, अन्य प्रेरितों की तरह, सुसमाचार को पृथ्वी के छोर तक ले गया।

मृत्यु: सबसे मजबूत परंपराएं कहती हैं कि उन्हें ईस्ट इंडीज के कोरोमंडल में भाले से मारा गया था – यह उस व्यक्ति के लिए शहादत का एक उपयुक्त रूप है, जिसका विश्वास तब परिपक्व हुआ जब उसने अपने गुरु की बगल में भाले का निशान देखा और जो पुनर्मिलन की इच्छा रखता था। अपने ईश्वर के साथ.

विरासत: काफी मात्रा में प्राचीन साक्ष्य हैं जो बताते हैं कि थॉमस ने सुसमाचार को भारत तक पहुंचाया। भारत के चेन्नई (मद्रास) में हवाई अड्डे के पास आज भी एक छोटी सी पहाड़ी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि थॉमस को दफनाया गया था। दक्षिण भारत में ऐसे चर्च हैं जिनकी जड़ें चर्च युग की शुरुआत में पाई जाती हैं, और

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 9

परंपरा कहती है कि उनकी स्थापना थॉमस के मंत्रालय के तहत की गई थी।

८. मत्ती, या उसके हिब्रू नाम लेवी का परिचय बहुत विरोधाभासी है। लेवी का अर्थ है ईश्वर का उपहार, और क्योंकि वह एक घृणित कर संग्राहक था, उसे अन्य यहूदियों को इस तथ्य को समझाने में कठिनाई हुई होगी! पूरी संभावना है कि बारह में से कोई भी मत्तित्याहू से अधिक कुख्यात नहीं था। किस कारण से उसने सब कुछ छोड़ दिया और येशुआ का अनुसरण करने लगा? अपने पेशे के कारण उसकी प्रताड़ित आत्मा ने चाहे जो भी अनुभव किया हो, अंदर से वह एक यहूदी था जो धर्मग्रंथों को जानता और प्यार करता था। वह आध्यात्मिक रूप से भूखा था और यीशु का आकर्षण अनूठा था। हम जानते हैं कि वह तानाख को बहुत अच्छी तरह से जानता था क्योंकि उसने इसे अपने सुसमाचार में निन्यानवे बार उद्धृत किया है। यह मरकुस, लूका और युहन्ना की कुल संख्या से भी अधिक है। बचाए जाने के बाद, वह शांत विनम्रता वाला व्यक्ति बन गया, जो बहिष्कृत लोगों से प्यार करता था और धार्मिक पाखंड का विरोध करता था – महान विश्वास और मसीह के प्रभुत्व के प्रति पूर्ण समर्पण का व्यक्ति। वह एक ज्वलंत अनुस्मारक के रूप में खड़ा है कि ईश्वर अक्सर इस दुनिया के सबसे घृणित लोगों को चुनते हैं, उन्हें छुटकारा दिलाते हैं, उन्हें नए दिल देते हैं, और उन्हें उल्लेखनीय तरीकों से उपयोग करते हैं।

मृत्यु: हम जानते हैं कि मत्तित्याहू ने अपना सुसमाचार यहूदी श्रोताओं को ध्यान में रखकर लिखा था। परंपराएं कहती हैं कि सुदूर देश इथियोपिया में तलवार से मारे जाने से पहले उन्होंने कई वर्षों तक इज़राइल और विदेशों दोनों में यहूदियों की सेवा की।491 इसलिए, यह व्यक्ति जो एक आकर्षक करियर को बिना दोबारा सोचे-समझे छोड़ कर चला गया। येशुआ हा-मेशियाच के लिए अंत तक अपना सब कुछ देने को तैयार रहे।

विरासत: क्षमा वह धागा है जो मत्ती ९ में उसके रूपांतरण के विवरण के बाद चलता है। निःसंदेह, एक कर संग्रहकर्ता के रूप में भी, मत्तित्याहू अपने पाप, अपने लालच और अपने ही लोगों के प्रति अपने विश्वासघात को जानता था। वह जानता था कि वह भ्रष्टाचार, जबरन वसूली, उत्पीड़न और दुर्व्यवहार का दोषी था। लेकिन जब येशुआ ने उससे कहा: मेरे पीछे आओ, मत्ती को पता था कि उस आदेश में क्षमा का वादा निहित था। और इसीलिए वह बिना किसी हिचकिचाहट के अपने कर संग्रह बूथ से उठ गया और अपना शेष जीवन मसीहा की सेवा में समर्पित कर दिया।

९. अल्फ़ियस के पुत्र याकूब का परिचय, जिसे कभी-कभी छोटे याकूब के नाम से भी जाना जाता है। यहूदा इस्करियोती को छोड़कर, अंतिम चार प्रेरित सुसमाचार की कहानियों में वस्तुतः चुप हैं। उनमें से किसी के बारे में बहुत कम जानकारी है, सिवाय इस तथ्य के कि उन्हें प्रेरितों के रूप में चुना गया था। हम सुसमाचार अभिलेखों में उनकी वीरता को अधिक नहीं देखते हैं, उन्हें सामान्य पुरुषों के रूप में चित्रित किया गया है। जब वे सामने आते हैं, तो वे अक्सर संदेह, अविश्वास या भ्रम प्रदर्शित करते हैं। लेकिन पुनरुत्थान के बाद चीज़ें बदल गईं। अचानक हम उन्हें

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 10

अलग तरह से व्यवहार करते हुए देखना शुरू करते हैं। वे मजबूत और साहसी हैं. वे चमत्कार करते हैं. वे नई खोजी गई निर्भीकता के साथ प्रचार करते हैं। लेकिन फिर भी, बाइबिल का रिकॉर्ड विरल है। मुख्य रूप से हम पतरस, युहन्ना और रब्बी शाऊल के बारे में सुनते हैं जो दमिश्क रोड पर अपने रूपांतरण के बाद पॉल के नाम से जाने गए (प्रेरितों ९:१-१९)। उनमें से बाकी लोग गुमनामी में चले गये। लेकिन उन सभी को एक कारण से चुना गया था।

बाइबल हमें इस आदमी के बारे में केवल उसका नाम बताती है। यदि उन्होंने कभी कुछ लिखा, तो वह इतिहास में खो गया है। यदि उसने कभी यीशु से कोई प्रश्न पूछा या समूह से अलग दिखने के लिए कुछ किया, तो पवित्रशास्त्र इसे दर्ज नहीं करता है। उन्होंने कभी भी प्रसिद्धि या कुख्याति की कोई डिग्री हासिल नहीं की। वह उस तरह का व्यक्ति नहीं था जो अलग दिखता हो। वह बिल्कुल अस्पष्ट था. हालाँकि, जब हम मरकुस १५:४० की तुलना युहन्ना १९:२५ से करते हैं तो उनके वंश के बारे में एक दिलचस्प संभावना है। दोनों छंदों में दो अन्य मरियमों का उल्लेख है जो येशुआ के क्रूस के पास प्रभु की माता मरियम के साथ खड़ी थीं। मरकुस १५:४० में मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और यूसुफ की माँ मरियम का उल्लेख है। यूहन्ना १९:२५ में यीशु की माँ की बहन, मरियम का नाम लिया गया है, जो क्रूस के पास खड़ी क्लोपास की पत्नी है। यह संभव है, शायद इसकी भी संभावना है, कि यीशु की माँ की बहन, क्लोपस की पत्नी मरियम और छोटे याकूब की माँ मरियम एक ही व्यक्ति थीं। क्लोपस अल्फ़ियस का दूसरा नाम हो सकता है, या याकूब की माँ ने उसके पिता की मृत्यु के बाद पुनर्विवाह किया होगा। इससे याकूब यीशु का छोटा चचेरा भाई बन जाता।

मृत्यु: उसके बारे में कुछ शुरुआती किंवदंतियाँ उसे प्रभु के भाई याकूब के साथ भ्रमित करती हैं। इस बात के कुछ सबूत हैं कि छोटे याकूब सुसमाचार को सीरिया और फारस तक ले गए। उनकी मृत्यु के विवरण अलग-अलग हैं। कुछ लोग कहते हैं कि उस पर पथराव किया गया; दूसरों का कहना है कि उसे पीट-पीटकर मार डाला गया; फिर भी अन्य लोग कहते हैं कि उन्हें उनके ईश्वर की तरह क्रूस पर चढ़ाया गया था। लेकिन दो बातें निश्चित हैं. एक, वह शहीद हो गया था, और दूसरा, उसका नाम स्वर्गीय शहर के द्वारों में से एक पर अंकित किया जाएगा (रहस्योद्घाटन Fu पर मेरी टिप्पणी देखें
– नए यरूशलेम में बारह द्वारों वाली एक महान, ऊंची दीवार थी)।

विरासत: सप्ताहों के पर्व के बाद कुछ वर्षों के भीतर अधिकांश टैल्मिडिम बाइबिल के दृश्य से कमोबेश गायब हो जाते हैं। किसी भी स्थिति में बाइबल हमें पूर्ण जीवनी नहीं देती। ऐसा इसलिए है क्योंकि धर्मग्रंथ हमेशा प्रभु और उनके वचन की शक्ति पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि उन लोगों पर जो उस शक्ति के साधन थे। वे लोग रुआच से भर गए और उन्होंने वचन का प्रचार किया। वास्तव में हमें बस यही जानने की जरूरत है। जहाज़ मुद्दा नहीं है; मालिक है. परन्तु स्वर्ग पूरी सच्चाई प्रकट करेगा कि वे कौन थे और कैसे थे। इस बीच, हमारे लिए यह जानना पर्याप्त है कि उन्हें राजाओं के राजा द्वारा चुना गया था, आत्मा द्वारा सशक्त किया गया था, और उनके समय

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 11

की दुनिया में सुसमाचार को ले जाने के लिए ईश्वर द्वारा उपयोग किया गया था।

१०. याकूब के पुत्र यहूदा का परिचय। यहूदा नाम अपने आप में एक अच्छा नाम है। इसका मतलब है कि प्रभु नेतृत्व करते हैं। लेकिन यहूदा इस्कैरियट के विश्वासघात के कारण, एडॉल्फ (एडॉल्फ हिटलर के लिए) जैसा नाम, हमेशा एक नकारात्मक अर्थ धारण करेगा। युहन्ना उसे यहूदा (इस्करियोती नहीं) कहता है। मार्टिन लूथर ने उन्हें डेर फ्रॉम यहूदा यानी अच्छा यहूदा कहा। याकूब के पुत्र यहूदा के वास्तव में तीन नाम थे। चर्च के फादर जेरोम ने उन्हें ट्रिनोमियस या तीन नामों वाला व्यक्ति कहा। मत्ती १०:३ में उसे लेबेअस कहा गया है, जिसका उपनाम थैडियस था। संभवतः यहूदा नाम उसे जन्म के समय दिया गया था। लेबेअस और थैडियस मूलतः उपनाम थे। थैडियस का अर्थ है स्तनपान करने वाला बच्चा और लेबेअस का शाब्दिक अर्थ है हृदय वाला बच्चा। दोनों नाम कोमल हृदय का संकेत देते हैं।

ब्रिट चादाशाह में केवल एक घटना दर्ज की गई है जिसमें यहूदा लेबेयस थैडियस शामिल है। यह उस रात को ऊपरी कमरे में था जब मसीहा को धोखा दिया गया था, और उसने कहा था: जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है वही मुझसे प्यार करता है। जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं भी उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा। फिर यूहन्ना आगे कहता है: तब यहूदा (इस्करियोती नहीं) ने कहा: परन्तु हे प्रभु, तू अपने आप को हम पर क्यों दिखाना चाहता है, और संसार पर क्यों नहीं (यूहन्ना १४:२१-२२)? यहाँ हम यहूदा की कोमल हृदय विनम्रता देखते हैं। उन्होंने कोई भी अभद्र, निर्भीक या अति आत्मविश्वास से भरी बात नहीं कही। उसने पतरस की तरह प्रभु को नहीं डांटा, जैसा उसने एक बार किया था। उसका प्रश्न नम्रता, नम्रता और अभिमान की भावना से रहित था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि गुरु स्वयं को बारहों को दिखाएगा, पूरी दुनिया को नहीं। चीफ शेपर्ड ने उसे प्रश्न के समान ही कोमल उत्तर दिया। यीशु ने उत्तर दिया: जो कोई मुझसे प्रेम करता है वह मेरी शिक्षाओं का पालन करेगा। मेरा पिता उन से प्रेम रखेगा, और हम उनके पास आएंगे, और उनके साथ अपना घर बसाएंगे (यूहन्ना १४:२३)। यह एक धर्मपरायण, आस्तिक व्यक्ति था।

लेबियस थैडियस के बारे में अधिकांश प्रारंभिक परंपरा से पता चलता है कि सप्ताह के पर्व (प्रेरितों २) के कुछ साल बाद, वह सुसमाचार को उत्तर की ओर, मेसोपोटामिया के एक शाही शहर एडेसा में ले गया, जो आज तुर्की होगा। इस बात के कई वृत्तांत हैं कि उसने एडेसा के राजा, अबगर नाम के एक व्यक्ति को कैसे ठीक किया। चौथी शताब्दी में, चर्च के इतिहासकार युसेबियस ने कहा कि एडेसा के अभिलेखागार, नष्ट होने के बाद से, थैडियस की यात्रा और अबगर के उपचार से भरे रिकॉर्ड थे।

मृत्यु: यहूदा लेबेयस थैडियस का पारंपरिक प्रेरितिक प्रतीक एक क्लब है, क्योंकि परंपरा हमें बताती है कि उसे अपने विश्वास के लिए क्लब में मारकर मौत के घाट उतार दिया गया था।

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 12

विरासत: इस प्रकार कोमल हृदय वाली आत्मा ने अंत तक ईमानदारी से अपने प्रभु का अनुसरण किया। उनकी गवाही उतनी ही शक्तिशाली और दूरगामी थी जितनी कि अधिक प्रसिद्ध और अधिक मुखर प्रेरितों की थी। वह, उनकी तरह, इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर कैसे सामान्य लोगों का उल्लेखनीय तरीकों से उपयोग करते हैं।

११. शमौन का परिचय जिसे कट्टरपंथी कहा जाता था (लूका ६:१५)। मत्ती १०:४ और मरकुस ३:१८ में, उसे शमौन कनानी कहा गया है। यह कनान की भूमि या काना गांव के संदर्भ में नहीं है। यह हिब्रू मूल कन्ना से आया है, जिसका अर्थ है उत्साही होना। जाहिर तौर पर, शमौन यहूदी राष्ट्रवादियों के सदस्य थे जिन्हें ज़ीलॉट्स के नाम से जाना जाता था। तथ्य यह है कि उन्होंने जीवन भर यह उपाधि धारण की, कई लोग यह भी सुझाव देते हैं कि उनका स्वभाव उग्र, जोशीला था। लेकिन यीशु के समय में यह शब्द एक प्रसिद्ध और व्यापक रूप से भयभीत गैरकानूनी राजनीतिक शक्ति का प्रतीक था। वे उग्र देशभक्त थे, अपने विश्वासों के लिए एक पल में मरने को तैयार थे।

ज़ीलोट्स एक धार्मिक संप्रदाय नहीं थे, बल्कि यहूदी राष्ट्रवादियों का एक समूह था, जो अपने समय का यहूदी मुक्ति मोर्चा था, जिसने रोमन कब्ज़ाधारियों को हिंसक रूप से उखाड़ फेंकने की वकालत की थी। इससे हमें येशुआ के मसीहाई एजेंडे के बारे में कुछ जानकारी मिलती है, क्योंकि उसने जानबूझकर अपने प्रेरितों में से एक को चुना था जो रोम का हिंसक विरोध करता था, साथ ही एक रोमन समर्थक (मत्ती) को भी चुना था, जिसे कब्ज़ा करने वाली ताकतों द्वारा नियुक्त किया गया था! शमौन उन्हीं का था (प्रेरितों १:१३)। बरअब्बा को उन विद्रोहियों में से एक कहा जाता है जिन्होंने विद्रोह में हत्या की थी (मरकुस १५:७; प्रेरितों ३:१४), एक कुख्यात कैदी (मत्ती २७:१६) और एक लेस्टेस, या एक डाकू (यूहन्ना १८:४०) . यीशु के दोनों ओर क्रूस पर चढ़ाए गए दो व्यक्तियों को डाकू कहा गया (मरकुस १५:२७)। बरअब्बा शायद एक उत्साही व्यक्ति रहा होगा। जोसेफस ने क्रांतिकारियों को “लुटेरे” के रूप में चित्रित किया है, जो उन्हें मुख्यधारा की यहूदी आबादी से हाशिए पर धकेलने का प्रयास कर रहा है। ये लुटेरे आम लोगों के बीच लोकप्रिय थे क्योंकि उन्होंने इज़राइल के धनी प्रतिष्ठानों को शिकार बनाया और रोमन सरकार के लिए तबाही मचाई। हालाँकि कुछ फरीसियों ने उनकी हिंसा का विरोध किया होगा, फिर भी कट्टरपंथियों ने, फरीसियों से अलग होते हुए, एक ही विचारधारा को आगे बढ़ाया है, यद्यपि अधिक उग्रवादी तरीके से।

मृत्यु: वह उतनी ही हिंसक तरीके से मर गया जितना कि वह एक बार आधे में काटे जाने के कारण जीवित रहा था। यह व्यक्ति जो एक बार यहूदा की सीमाओं के भीतर एक राजनीतिक आदर्श के लिए मारने या मारे जाने को तैयार था, उसे अपना जीवन देने का एक अधिक उपयोगी कारण मिला – हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्र के पापियों के लिए मुक्ति की घोषणा में (प्रकाशितवाक्य ५:९बी).

विरासत: यह आश्चर्यजनक है कि येशुआ ने शमौन जैसे व्यक्ति को प्रेरित बनने के लिए

Cy – यह बारह प्रेरितों के नाम हैं मत्ती १०:१-४; मरकुस ३:१३-
१९; लूका ६:१२-१६ | 13

चुना। लेकिन वह प्रचंड निष्ठा, अद्भुत जुनून, साहस और जोश के व्यक्ति थे। उन्होंने सत्य पर विश्वास किया और मेशियाच को ईश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में अपनाया। कई प्रारंभिक स्रोतों का कहना है कि यरूशलेम के विनाश के बाद, शमौन सुसमाचार को उत्तर की ओर ले गया और ब्रिटिश द्वीपों में प्रचार किया।

१२. यहूदा इस्करियोती का परिचय, जिसने उसे धोखा दिया (मरकुस ३:१९)। यहूदा का अर्थ है कि प्रभु नेतृत्व करता है, और यह दर्शाता है कि जब वह पैदा हुआ था तो उसके माता- पिता को उससे ईश्वर द्वारा नेतृत्व पाने की बड़ी आशा रही होगी। नाम की विडम्बना यह है कि यहूदा की तुलना में किसी भी व्यक्ति को शैतान द्वारा इतनी स्पष्टता से निर्देशित नहीं किया गया था। K’roit से यहुदा का मतलब K’riot शहर का एक आदमी है। उनके पैतृक शहर का संदर्भ दिया गया है जो यहोशू १५:२४ में येरुशलायिम से लगभग बीस मील दक्षिण में यहूदा के सबसे शहरों में से एक के रूप में दिया गया है। यहूदा हर तरह से साधारण था, अन्य तालिमिडिम की तरह। सफ़ेद रंग के अपने बाहरी वस्त्र के नीचे, यहूदा ने दो बड़ी जेबों वाला एक चमड़े का एप्रन पहना था, और इनमें वह राजकोष रखता था। उसने अपनी बांह के नीचे एक छोटा बक्सा भी रखा होगा। यह महत्वपूर्ण है कि जब मसीह ने भविष्यवाणी की कि उनमें से एक उसे धोखा देगा, तो किसी ने यहूदा पर संदेह की उंगली नहीं उठाई (मत्ती २६:२२-२३)। वह अपने पाखंड में इतना माहिर था कि कोई भी उस पर अविश्वास नहीं करता था। लेकिन यीशु शुरू से ही उसके बुरे दिल को जानता था (यूहन्ना ६:६४)।

मृत्यु: एलएम देखें – यहूदा ने खुद को फांसी लगा ली।

विरासत: यहूदा सभी प्रेरितों में सबसे कुख्यात और सार्वभौमिक रूप से तिरस्कृत है। वह सदैव गद्दार के रूप में जाना जायेगा। प्रेरितों १ को छोड़कर, जहां यह बिल्कुल भी प्रकट नहीं होता है, उसका नाम टैल्मिडिम की प्रत्येक बाइबिल सूची में सबसे अंत में आता है। जब भी पवित्रशास्त्र में यहूदा का उल्लेख किया जाता है, तो हमें उसके गद्दार होने का भी उल्लेख मिलता है। वह पूरे मानव इतिहास में सबसे बड़ी विफलता है। उसने कुछ चाँदी के सिक्कों के लिए परमेश्वर के सिद्ध, पापरहित, पवित्र पुत्र को धोखा दिया। उनकी अंधेरी कहानी इस बात का दर्दनाक उदाहरण है कि मानव हृदय कितनी गहराई तक डूबने में सक्षम है। उसने ईसा मसीह के साथ साढ़े तीन साल बिताए, लेकिन इतने समय में उसका दिल केवल कठोर और घृणास्पद हो गया।